उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

UTTARAKHAND EXAM NOTES

Mr. Satpal Chauhan
Sir

उत्तराखण्ड 'समूह "ग"

VDO/VPDO/RO/ARO

सहायक समाज अधिकारी

चकबंदी अधिकारी/सुपर वाइजर

पटवारी/उत्तराखण्ड पुलिस

एल.टी./प्रवक्ता/आबकारी

आदि हेतु सम्पूर्ण हस्त लिखित अध्ययन सामग्री एवं प्रैक्टिस सैट के लिए संपर्क करें।

7579431731, 9411385738

L-58, MDDA Complex, Clock Tower, Dehradun
www.uttarakhandexamnotes.com

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

आदिम जाति 'राजी'

राजी लोग स्वंय को अस्कोट के प्राचीन राजवंश मानते है, इसलिए वे अपनी जाति रजवार भी लिखते हैं, जबकि नृवंश विज्ञानी उन्हें किरातो के वंशज मानते है। इस जाति का अस्तित्व भी खतरे में है माना गया है इन्हें 1967 में जनजाति और 1975 में आदिम जाति घोषित किया गया। जनजातियों में शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से ये अन्तिम पायदान पर है। इनका स्वाभिमान भी इनके अतीत की ओर संकेत करता है।.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और मूल

– अन्य आदिवासियों की ही तरह इतिहासकार और मानव शास्त्री 'राजियो' को "वन रौतो या रावतों" के मूल के बारे में भी एक राय नही रखते है। कुछ लेखक राजियों को किरात वंशीय मानते है। प्रमाणिक जानकारियां न मिलने के कारण इनके बारे में भ्रांतियां अधिक रही है। लेकिन मानव शास्त्री यह स्वीकार करते ही है कि खस, नागा और आर्यों से पहले ही उत्तराखण्ड में राजियों के पुरखे राजि किरात आ गये थे। PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579453731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036434

राजी कुमाऊं में प्रवेश करने वाला सबसे पुराना मानव समूह था। किरात जाति के सम्बन्ध में कुछ समाज शास्त्रीय एवं नृवैज्ञानिक प्रमाणो के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रागैतिहासिक युग में कुमाऊं-गढ़वाल के भू-भाग किरात, मंगोल आदि आर्येतर जातियों के निवास क्षेत्र रहे जिन्हे कालान्तर में उत्तर-पश्चिम को आने वाले अवैदिक खस आर्यो कर लिया। यह भी सम्भावना है कि इस प्रदेश पर आग्नेय परिवार की मुण्डा भाषा-भाषी किरात जाति का प्रभुत्व दीर्घकाल तक रहा हो, अन्यथा प्राचीन काल में इसे किरात मण्डल की संज्ञा न मिलती। अपने स्वतन्त्र भाषाई अस्तित्व के साथ किरातो के वंशज व्याज भी कुमाऊं के अस्कोट एवं डीडीहाट आदि स्थानो मे मौजूद है एटकिन्सन ने 'गजेटियर आफ हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स(1882) में वाराह संहिता का संदर्भ लेते हुए लिखा है कि अमर वन तथा चीन अर्थात जागेश्वर तथा तिब्बत के बीच का भू-प्रदेश राज किरातो का था। लेकिन विभिन्न नृजातीय आक्रमणो के फलस्वरूप मे किरात धीरे-धीरे इस क्षेत्र से पलायन कर गये और उनके कुछ वंशज कुमाऊं नेपाल में ही छूट गये कुमाऊं में उन्हे "वनरौत" 'राजि' के नाम से जाना जाता है, जबकि नेपाल में कोसी के पूरब मे उन्हे 'राई' या 'लिम्बू' नाम से जाना जाता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579453731
सतपाल चौहान सर

राहुल सांकृत्यायन ने भी भाषायी आधार पर राजियों को राजकिरातों के वंशज होने का अनुमान लगाया है। विद्वानो का कहना है कि अगर ये राजि अस्कोट राजपरिवार से ही सम्बन्धित थे तो भी उस राजघराने के लोग स्वयं को "कत्यूर" राजा का वंशज मानते है और उस वंश का किसी समय काबुल से लेकर नेपाल तक साम्राज्य था। विलियम क्रुक ने 'ट्राइब्ज एण्ड कास्ट्स ऑफ नार्थ वेस्ट प्रोविन्सेस एण्ड अवध" में राजियों को कोर आर्यों से सम्बन्धित माना है। दूसरी ओर एटकिंसन ने उनकी शारीरिक बनावट में तिब्बती खस प्रजातियों का मिश्रण बताया है। पुराणों में 'राज किरातो' के अस्तित्व को स्वीकारा है गया है।

=> उनके बारे में कहा जाता है कि वे राजा के अलावा किसी का भी अभिवादन या नमस्कार नही करते।

शारीरिक बनावट

सामान्यतः राजि पुरुष की त्वचा का रंग गेहुंआ, औसत ऊंचाई, भूरापन लिए सीधे और छितरे बाल, मध्यम लम्बे आकार का सिर, छोटी-छोटी धूसर आंखें, पतला और छरहरा बदन, हल्का लम्बाई लिए गोल चेहरा, मध्यम आकार की नाक आदि प्रमुख विशेषताएं है; जो निकटवर्ती भोटिया जनजाति से भिन्न है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579453731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

राजि बोली या भाषा -

आदिम जाति होने के साथ ही इनकी भाषा भी आदिम कालीन ही मानी जाती है। यद्यपि शेष समाज से मेल जोल के कारण इनकी बोली में अब 'तिब्बती और कुमाऊंनी' बोलियों का मिश्रण हो गया है। फिर भी कुमाऊं में रहने के बावजूद उनकी भाषा कुमाऊंनी से अलग है। डा० डी० डी० शर्मा ने अपनी पुस्तक "तिब्बटो हिमालयन लेंग्वेज" में डा० शोभा राम शर्मा के शोध पत्र तथा बी. डी. पाण्डे की पुस्तक 'कुमाऊं का इतिहास' से सन्दर्भ लेते हुए राजियों की मूल भाषा को मुण्डा भाषा के सबसे करीब बताया है।

★ राजि बोली के कुछ शब्द -

ती = पानी, मे = आग, ज्या = भोजन
या = मां

सप्ताह के दिन -

डी = रविवार, किलेक = सोमवार, नीव = मंगलवार
कुन्व = बुधवार, फारेख = बृहस्पतिवार
पच = शुक्रवार, खाटव = शनिवार

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7574431731
सतपाल चौहान सर

विवाह एवं सांस्कृतिक - पक्ष

9411385738 9897038494

वन राजि आदिम जाति मुख्य रूप से पांच घड़ो मे विभक्त है। जिनमे अस्कोटी पाल, डिन्डी पाल, बैतड़ा, ऐरी तथा क्वैन्तला शामिल है। जिन स्थानो पर ये वन रौत रहते है, उन्हे प्रायः "रौत्यूड़ा" कहा जाता है। ये घड़े आपस मे सभी वैवाहिक सम्बन्ध रखते है। लेकिन मजबूरी मे एक घड़े के अन्दर भी विवाह को सामाजिक मान्यता है। शेष समाज से अलग-थलग रहने और जंगलो मे प्रवास के कारण इस आदिम जाति के लोगो के बाहरी समाज मे अन्य क्षत्रिय जातियों से वैवाहिक सम्बन्ध अब तक नही है। इसलिए उन्हे आपस मे ही रिश्तेदारियां बनानी होती है थी। मजबूरी मे तीसरी पीढ़ी को आपस मे वैवाहिक सम्बन्धों की इजाजत रही है। सिद्धान्त रूप से पितृस्थानीय समाज होने पर भी इनमें घर जवाई की प्रथा भी है; लेकिन शादी के बाद उस युवक का अपने पिता की सम्पति पर कोई अधिकार नही रहता है। इस समुदाय मे कन्या का मुल्य और बाल विवाह की प्रथा भी है। विवाह संस्कार से पूर्व "मांगजांगी" तथा "पिठा" की प्रथा सम्पन्न की जाती है। कभी-कभी युवक-युवतिया सह पलायन भी कर जाते है . . .

उत्तराखण्ड एजुकेशन नोट्स
सतपाल-चौहान सर 7579431731

सारी दुनिया में जहां जनसंख्या बढ़ रही है और हमारा देश भारत जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दुनिया में दुसरे नम्बर पर आ गया है, वहीं हमारे देश में वनराजी, सेंटिनलीज, ओंग और जारवे जैसी कई आदिम जातियों की आबादी बढने के बजाय घटती जा रही है। या फिर सदियों से स्थिर बनी हुई है।

ऐटकिन्सन ने राजियों के ही क्षेत्र में 'लूल' जाति का उल्लेख किया है जो कि अब लुप्त हो गयी है।

उत्तराखण्ड एजुकेशन नोट्स 9411385738 8077036494

राजि धर्म एवं देवी देवता - अधिकांश जनजातियों की ही तरह वनवासी राजि प्रकृति पूजक हैं और देवताओं के रूप में वृक्ष और भूमि आदि की पूजा करते हैं ये प्रकृति के पूजक जगोनाथ भलेनाथ और मल्लिकार्जुन की पूजा करते हैं ये और कभी-कभी अपनी सुख शांति तथा कन्दमूल फलो अच्छे आखेट की उपलब्धता के लिए बकरियों और मुर्गियों की बलि चढ़ाते हैं। पहले उनके कोई मन्दिर नहीं थे। अपने देवताओं के प्रतीक के तौर पर खड़े पत्थर की पूजा करते थे।

उत्तराखण्ड एजुकेशन नोट्स
सतपाल-चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर
9411385738
8077036494

जन्म संस्कार - हिन्दुओं में बच्चो के जन्म के बाद नामकरण एक प्रमुख संस्कार होता है जो कि सामान्यत: जन्म के 11वे या फिर 21वे दिन में होता है। या सवा महीने से पहले हो जाता है। मगर राजि आदिम जाति में बच्चे का नामकरण 6 माह से पहले नही होता हैं। यह संस्कार कभी- कभी तो उससे भी बिलम्ब से होता है।

मृत्यु संस्कार - वनवासी राजि ऐसे हिन्दू रहे है जिनके लिए वनवास की भंयकर परिस्थितियों में इन संस्कारों का कोई महत्व नही था। उनके लिए जन्म और विवाह की तरह मृत्यु के बाद किसी के लिए संस्कार या धार्मिक औपचारिकताएं करना निर्रथक था। एटकिन्सन का कहना है कि जब किसी राजि की मौत हो जाती थी तो वे जंगल में बनी उस झोपड़ी या गुफा में मृतक के शव छोड़ देते है। कर अन्यत्र चले जाते थे। प्राचीन रिवाज में परिवार में यदि किसी की मृत्यु होती थी तो लोग उस मकान या झोपडी को अशुभ मानकर उसकी छत तोडकर अन्य स्थान पर चले जाते थे। वे भूत प्रेत के डर से भी उस ठिकाने को छोडते थे। लेकिन बाद में शवो को दफनाने और जलाने लगगये।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8877034494
सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579453731

वनवासी और वनाधिकार कानून - संसद द्वारा 2006 में पारित अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम राजि जैसी वनवासी जनजातियों के लिए ही बना है, लेकिन इन जनजातियों के लिए संसद के लिए इस उपहार का लाभ उत्तराखण्ड के जंगलों के अन्दर तक पहुंचना अभी बाकी है। इस अधिनियम के तहत 13 दिसम्बर 2005 से पहले वन भूमि पर काबिज लोगों को उस भूमि का अधिकार एवं पट्टा देने का प्रावधान है।

गूल निर्माण शैली - मानव शास्त्रियों के अनुसार वन राजियों में लकड़ी के बर्तन बनाने के अलावा 'गूल निर्माण' का भी असाधारण ज्ञान हासिल है और वे इसके लिए क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। उनकी भले ही कृषि में कम रूचि रही हो परन्तु उनकी बनाई गई गूलों से निकटवर्ती कुमाऊंनी गावों की खेती लहलहाती ~~है~~ रही है। वे कठिनतम पहाड़ी क्षेत्र से गूल निकालकर उसका पानी प्रत्येक खेत तक पहुंचाने की हाइड्रो इंजीनियरिंग (जल अभियांत्रिकी) के माहिर होते हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8877034494
सतपाल चौहान

(9) (राजि जनजाति)

महत्वपूर्ण तथ्य

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

सामाजिक व्यवस्था

- विवाह से पूर्व 'सांग बांगी' व 'पिन्ठा' प्रथा
- ⇒ निवास स्थान को 'रौत्यूड़ा' कहा जाता है
- ⇒ मातृभाषा 'मुंडा' परन्तु स्थानीय भाषा का प्रभाव
- ⇒ 'वधू मूल्य' प्रथा का प्रचलन, पलायन विवाह कम है।
- ⇒ वर्तमान में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार

धार्मिक जीवन

- बाघनाथ, मलयनाथ, गणनाथ, सैम, मल्लिकार्जुन, नन्दा देवी आदि देवता हैं परन्तु 'बाघनाथ' मुख्य देवता है
- हिन्दू धर्म का अनुसरण करते है।
- विशेष नृत्य रिंगडांस (थड़िया जैसा नृत्य) है

अर्थव्यवस्था

- काष्ठ कला व झूम खेती मुख्य कार्य है
- पूर्व में 'मूक विनिमय' द्वारा जीवनयापन करते थे।

महत्वपूर्ण तथ्य

* राज्य की न्यूनतम आबादी वाली आदिम जनजाति
* राज्य के पहले विधान सभा चुनाव में इस जनजाति का प्रथम 'गगन सिंह रजवार' (धारचूला से)
* सबसे कम साक्षर जनजाति

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

UTTARAKHAND EXAM NOTES

उत्तराखण्ड पीसीएस (PCS), उत्तराखण्ड लोअर पीसीएस (PCS), समीक्षा अधिकारी, प्रवक्ता, एल0 टी0, उत्तराखण्ड वन दरोगा, उत्तराखण्ड समूह ग, उत्तराखण्ड कांस्टेबल एंव दरोगा, आबकारी एंव प्रवर्तन सिपाही, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट क्लर्क। हमारे द्वारा सभी प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित ऑनलाइन तथा ऑफलाइन हस्तलिखित नोट्स उपलब्ध कराये जाते हैं।

सतपाल चौहान

ADDRESS: L-58 MDDA COMPLEX CLOCK TOWER DEHRADUN UTTARAKHAND
PH: 7579431731, 9411385738, E-MAIL: uttarakhandexamnotes@gmail.com
WEBSITE:- www.uttarakhandexamnotes.com
Facebook Page: https://www.facebook.com/UTTARAKHANDEXAMNOTES/